प्रकाशनार्थ

नदी जीवन प्रबंधन प्रणाली में हरित कौशल प्रबंधन कार्यक्रम के तहत ईएसटी/ एसटीपी/ सीईटीपी संचालन एवं रखरखाव पाठ्यक्रम का समापन समारोह

पटना, 26 अप्रैल, 2019 । आद्री स्थित नीतिगत अनुसंधान थिंक टैंक –सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एनर्जी एंड क्लाइमेट चेंज (सीईईसीसी) के द्वारा बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) और गुजरात क्लीनर प्रोडक्शन सेंटर (सीजीपीसी) के सहयोग से पटना स्थित आद्री परिसर में नदी जीवन प्रबंधन प्रणाली (आरएलएमएस) में **हरित जीवन विकास कार्यक्रम (जीएसडीपी)** के लिए **''ईटीपी (निम्नाव उपचार संयंत्र)/ एसटीपी (अपशिष्ट उपचार संयंत्र)/ सीईटीपी (सामान्य निम्नाव उपचार संयंत्र) का संचालन एवं रखरखाव''** पाठ्यक्रम के समापन पर समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बिहार सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र प्रदान किए।

कौशल विकास प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यवहारिक प्रशिक्षण देकर गंगा नदी के 10 किमी के दायरे में रहने वाले समुदायों का क्षमता निर्माण करना और व्यक्तियों का संसाधन समूह तैयार करना था।आशा की गई है कि इससे गंगा नदी के प्रदूषण की समस्या पर काम करने के लिहाज से कार्रवाई आधारित जागरूकता और संवेदनीकरण अभियान के लिए आंदोलनों की श्रृंखला विकसित होगी।

नदी जीवन प्रबंधन प्रणाली (आरएलएमएस) भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एक अद्वितीय पहल है जिसका मकसद देश की विभिन्न नदियों में प्रदूषण की स्थिति पर काम करना है। गंगा नदी के संरक्षण और पुनर्जीवन के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ मंत्रालय ने आद्री स्थित सीईईसीसी को बिहार में गंगा नदी के आसपास रहने वाले लोगों के कौशल विकास प्रशिक्षण की योजना बनाने और प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए नोडल केंद्र बनाया है। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी), गुजरात क्लीनर प्रोडक्शन सेंटर (सीजीपीसी), जेडएसआइ, डब्ल्यूआइआइ, बीएनएचएस, एफआरआइ आदि के साथ मिलकर सीईईसीसी इसके जरिए चार स्तरों का प्रशिक्षण चलाने जा रही है। ये प्रशिक्षण हैं – ईटीपी/ एसटीपी/ सीईटीपी संचालन एवं रखरखाव, जैव विविधता, डॉल्फीन संरक्षण एवं जलकृषि प्रबंधन, वन आधारित उद्यम एवं वैकल्पिक जीविका प्रबंधन, पारिस्थितिक पर्यटन (इकोटूरिज्म) तथा वैकल्पिक जीविका प्रबंधन।

अपने स्वागत भाषण में आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी. घोष ने परियोजना की प्रासंगिकता और बिहार तथा पूरी दुनिया में पर्यावरण संबंधी मुद्दे के बारे में जानकारी दी।

आद्री स्थित सीईईसीसी के निदेशक सह एनविस के समन्वयक अबिनाश मोहंती ने संदर्भ तय करने के लिए संबोधित किया और हरित कौशल विकास कार्यक्रम तथा ईटीपी/ एसटीपी/ सीईटीपी कार्यसंचालन एवं रखरखाव पर नदी जीवन प्रबंधन प्रणाली की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। उन्होंने गंगा नदी के प्रदूषण पर काम करने के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अद्वितीय पहल तथा हरित कौशल विकास कार्यक्रम के अन्य मॉड्यूल- जलकृषि प्रबंधन, वन आधारित उद्यम और वैकल्पिक जीविका प्रबंधन का भी उल्लेख किया।

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार घोष ने अपने वक्तव्य में इस पाठ्यक्रम के महत्व तथा जल संबंधी विभिन्न प्रजातियों, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और जैवविविधता के नुकसान के मुद्दों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हर अस्पताल में ईटीपी/ एसटीपी स्थापित किया जाना चाहिए।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की प्रधान सलाहकार सुश्री आनंदी सुब्रामनियन ने वीडियो मैसेजिंग के जरिए प्रशिक्षुओं को संबोधित किया। इसमें उन्होंने कहा कि अग्रणी बैच पर पर्यावरण संरक्षण और नदी जीवन प्रबंधन के मामले में मार्गदर्शन करने का दायित्व है।

बिहार सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने पर्यावरण के अनुकूल विकास और पर्यावरण संरक्षण पर उसके प्रभाव पर अपने विचार रखे। उन्होंने इलक्ट्रॉनिक कचरे के पैदा होने और निपटान तथा मृदा प्रदूषण के बारे में भी जानकारी दी।

अंत में इनविस के प्रोग्राम ऑफिसर, विवके तेजस्वी ने सभी अतिथियों तथा प्रशिक्षुओं को धान्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

इस कार्यक्रम में डा. गोपाल शर्मा, डा. सुनीता लाल, डा. विभा कुमारी तथा अन्य आद्री के फैकल्टी मेम्बर्स एवं जीएसडीपी के प्रशिक्षु भी उपस्थित थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)